Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 2
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

किशोरावस्था में छात्रों का मादक पदार्थों के व्यसन से ग्रसित होने के कारणों का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन

प्रमोद कुमार सिंह
शोधार्थी, (एम. फिल. समाजशास्त्र)
ठा. रणमत सिंह शासकीय महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

Article Info

Article History
Received : 03 May 2024
Published : 12 May 2024

Publication Issue :
May-June-2024
Volume 7, Issue 3

Page Number : 25-32

सारांश– नशे की प्रवृत्ति जानलेवा होती है। इससे गंभीर बीमारियां होती हैं, बावजूद नशाखोरी के आंकड़े घटने की बजाय बढ़ते जा रहे हैं। ऐसा भी नहीं है कि धूम्रपान या नशाखोरी के लिए जागरूकता अभियान नहीं चलाये जा रहे हैं। टी.वी., रेडियो, समाचार–पत्रों के माध्यम से विद्यार्थियों एवं आम नागरिकों को जागरूक करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं, फिर भी विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यह बहुत ही दुःखद है कि इतनी जागरूकता के बावजूद भी इससे विद्यार्थियों सबक नहीं ले रहे हैं। पिछले दिनों भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् (आईसीएमआर) द्वारा करवाये जा रहे शोध में यह बात सामने आयी कि तम्बाकू का सेवन लोगों के दिल का सबसे बड़ा दुश्मन है। लगभग 40 प्रतिशत लोगों में हार्ट अटैक का कारण तम्बाकू सेवन बताया जा रहा है। निश्चित रूप से यह स्थिति चिंताजनक है। चिकित्सक कहते हैं कि यदि आज के युवा नहीं संभाले और नशे के प्रति जागरूक नहीं हुए तो आने वाले दिनों में परिणाम और भी घातक होंगे। विद्यार्थियों में नशे का आकर्षण और उसकी सामाजिक स्वीकार्यता विगत कुछ दशकों में तेजी से बढ़ी है। संचार माध्यमों और 'सेलीब्रिटी' संस्कृति से मिल रहे बढ़ावे को सामाजिक रूप से खारिज करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। छात्र अधिकांशतः विद्यालयों में या बाहर अपने साथियों से नशाखोरी सीखते हैं। इसके लिए जरूरी है कि विद्यालयों में नशाखोरी के दुष्प्रभावों के विषय में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रयास किए जायें। नशाखोरी विषय को शोध एवं पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाये जाने की जरूरत है। शराब, सिगरेट एवं खैनी का सेवन थोड़ी मात्रा में भी शरीर को नुकसान पहुंचाता है, लेकिन जब यह लत बन जाए तो स्थिति बेकाबू होने लगती है। तम्बाकू से न सिर्फ दिल की बीमारी होने का खतरा रहता है बल्कि कैंसर व अन्य बीमारियों का भी यह बड़ा कारण है। दिखावा व बाहरी चमक में फंसकर विद्यार्थी नशे के आदी होते

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

जा रहे हैं। सरकारी व प्रशासनिक लापरवाही की वजह से भी यह समस्या बढ़ रही है। सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध और नाबालिकों को तम्बाकू उत्पाद बेचने पर रोक जैसे कानून का सख्ती से पालन नहीं हो रहा है। इसी तरह विद्यार्थियों के क्रियाकलापों पर नजर रखने के साथ ही उन्हें नशे से होने वाले नुकसान के प्रति जागरूक करना होगा। सभी मिलकर काम करेंगे तभी नशा मुक्त समाज का निर्माण संभव हो सकेगा।

मुख्य शब्दः– धूम्रपान, कैंसर, अनुसंधान, व्यसन एवं जागरूकता।

प्रस्तावना– नशे से हमारा अभिप्राय उस उत्तेजक पदार्थ के सेवन से है, जिनसे मनुष्य को अपनी शारीरिक, मानसिक गतिवधि पर नियन्त्रण नहीं रहता। विद्यालय में इन पदार्थों का पदार्पण बहुत घातक है परन्तु यदि छात्रा इस बुराई के सम्पर्क में आते है, तो उनके □भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लग सकता है। किशोरावास्था में बालक के विकास की गति तीव्र होती है, जो बालक नशा रूपी राक्षस के सम्पर्क में आता है, राक्षस बालक को इसकी बुराई की तरफ ध्यान नहीं देने देता अपितु अपनी ओर आकर्षित करता है। बालक जब इसे अपनाता है तो उसे इसका □भयानक छिपा हुआ रूप नहीं दिखाई देता, जिससे वह इसे स्वीकार कर लेता है। नशा रूपी राक्षस बालक के □भविष्य में रुकावट खड़ी कर देता है।

छात्र जीवन में नशे का प्रयोग समाज के लिए बहुत बड़ी समस्या है क्योंकि यदि छात्रा इन बुराइयों से ग्रसित होगा। तो समाज भी इससे प्रभावित होगा। तब हम एक अच्छे समाज का गठन नहीं कर पाएँगे। किशोरावस्था के लिए आंग्ल भाषा में एडोलेसेन्स शब्द का प्रयोग किया जाता है, इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के क्रिया पद एडोलेसीअर से हुई है, जिसका अर्थ होता है वृद्धि होना। इस अर्थ में किशोरावस्था को अत्यधिक वृद्धि और विकास की अवस्था जाना व समझा जाता है। वृद्धि व विकास के सभी आयामों को लेकर इस अवस्था में बालक और बालिकाओं में आश्चर्यजनक वृद्धि, विकास और परिवर्तन दृ ष्टिगोचर होते हैं। विभिन्न प्रकार की महत्वाकांक्षाओं तथा बुनियादी आवश्यकताओं की उचित पूर्ति और संतुष्टि एक किशोर के लिए बहुत अधिक महत्व रखती है। अपने आप व वातावरण में समायोजित या कुसमायोजित होने की चाबी एक तरह से किशोर की महत्त्वकांक्षाओं और आवश्यकताओं की संतुष्टि या असंतुष्टि पर बहुत कुछ निर्भर करती है।

इस संदर्भ में किशोरों को अपेक्षित मार्गदर्शन तथा परामर्श सेवाओं की बहुत अधिक आवश्यकता आ पड़ती है। ड्रग वह पदार्थ है जो मनुष्य एवं जानवर की बीमारियों की पहचान उनके रोकथाम के लिए प्रयोग किया जाता है। उपरोक्त दिए गए तथ्यों के आधार पर हम यह कह सकते है कि ड्रग एक ऐसा पदार्थ है जो मनुष्य एवं जानवर के शरीर को मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है।[1] परन्तु कुछ ड्रग इस प्रकार के है जिनका नियमित एवं अधिक मात्रा में उपयोग मनुष्य को उसका गुलाम बना सकता है। मनोरंजक ड्रग का प्रयोग मानव द्वारा मानसिक सन्तुष्टि के लिए किया जाता है। कुछ मनोरंजक ड्रग को कानून द्वारा मान्यताएँ भी प्राप्त है। जिन्हें सांस्कृतिक रूप से स्वीकार किया गया है। परन्तु इनका प्रयोग आयु अनुसार एवं सीमाओं को ध्यान में रखकर किया जाए इसके लिए कुछ नियम बने है।

हम उस मनुष्य को नशे की लत से ग्रसित कह सकते हैं जो किसी ड्रग को नियमित रूप से लेता है। तथा उसके पश्चात वह अपने मानसिक संतुलन पर नियन्त्रण करने में अपने आपको असमर्थ पाता है। तथा अपने कार्य–कलाप को अपने सामर्थ्य के अनुसार नहीं कर पाता तथा समय पर ड्रग का सेवन न करने पर वह अपने आपको परेशानी की अवस्था में पाता है, तथा उसकी प्राप्ति के प्रयास को प्राथमिकता देता है।

किशोरावस्था के छात्रों का मादक पदार्थों के व्यसन से ग्रसित होने के कारणों का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन।

समस्या की उत्पत्ति– जब मैंने विद्यालय प्रांगण में विद्यार्थियों को नशे की हालत में पाया तो एक अध्यापक के रूप में मुझे यह देखकर अत्यन्त दुख एवं आश्चर्य हुआ। अपने इस कार्य के दौरान मैंने कुछ छात्रों को इस आदत से ग्रसित पाया। इस आदत के फलस्वरूप उनकी प्रक्रिया तो प्रभावित होती है लेकिन उनका शारीरिक विकास भी प्रभावित होता है। विद्यार्थियों की इस हालात को देखकर नशे की लत से ग्रसित छात्रों पर अध्ययन करने की ओर ध्यान गया। नशे की लत के कारणों को जानकर उनका संभावित हल ढूंढने के उद्देश्य के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई। विद्यार्थी देश का भविष्य होते हैं। विकास की नींव छात्रावर्ग हैं। यदि छात्रावर्ग किसी दोष से ग्रसित होगा, तो भविष्य में विकास की योजनाओं को पूरा करना संभव नहीं है। इस तथ्य को सामने रखकर छात्रों पर अध्ययन का विचार आया, जिसके लिए प्रयास किए गए।

अध्ययन के उद्देश्य

1. छात्रों में नशे की प्रवृत्ति के कारणों को जानना।
2. ग्रसित छात्रों के अपने सहपाठी के साथ किए जाने वाले व्यवहार का अध्ययन करना।
3. नशा खरीदने के लिए संबंधित आय स्त्रोत का अध्ययन करना।
4. परिवार तथा अपने आसपास के ग्रसित छात्रों द्वारा किए जाने वाले व्यवहार का अध्ययन करना।
5. ग्रसित छात्रों के प्रति अध्यापक के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

अध्ययन की सीमाएँ– शोधकार्य के लिए समय व धन के अभाव के कारण मध्य प्रदेश के रीवा जिले के एक ही विद्यालय के छात्रों को चुना गया। इसमें 6 से 12 के छात्रों को लिया गया। जिनका सम्बन्ध किशोरावस्था से है। कुछ छात्रों द्वारा अपने माता–पिता के सामने तथ्यों को प्रस्तुत करने से मना करने पर माता–पिता का साक्षात्कार छात्रों से गुप्त रखा गया। माता–पिता को भी प्रत्यक्ष रूप से यह नहीं बताया गया कि उनका बच्चा इस समस्या से पीड़ित है क्योंकि नहीं तो ये छात्र अपने बारे में अध्ययन से संबंधित तथ्यों का स्पष्टीकरण नहीं करेगें। अपने शोधकार्य के लिए उनकी इस शर्त को स्वीकार किया गया, तथा कोशिश यह की गई कि उनकी इस लत से संबंधित कारणों को जानकर उनके हल छात्र एवं माता पिता के सामने रखे जाए ताकि बच्चे को उचित मार्गदर्शन मिल सके। जो छात्र यह स्वीकार करते हैं कि उनकी इस लत से उनके माता–पिता परिचित हैं। उनका ही प्रत्यक्ष साक्षात्कार करवाया गया। नशा प्राप्ति के स्रोतों को भी जानने का प्रयास किया गया ताकि भविष्य में इन स्त्रोतों को खत्म करने का प्रयास किया जा सके।

संबंधित साहित्य का अध्ययन– व्यक्ति के समक्ष अनेक समस्याएँ हैं तथा मानव इन समस्याओं का समाधान चाहता है। इसलिए अतीत में किए गए शोध तथा विचारों को ध्यान में रखते हुए नवीनतम शोध कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है। अतः समस्याओं का समुचित रूप से समाधान करने के लिये विषय से संबंधित अध्ययन पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत अध्ययन का विशेष महत्व है।

संबंधित शोध के व्यवस्थित स्वरूप से तात्पर्य कि क्या प्रस्तुत अध्ययन अनावश्यक रूप से पुनः तो नहीं हो रहा है। इस आयाम में क्या कुछ पहले भी शोध नहीं हो रहा है। इस आयाम में क्या कुछ पहले भी शोध हुआ है। स्त्रोतों प्रक्रियाओं और उसके परिणामों के रूप में शोध के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान समस्या के परिभाषीकरण, चयन विधि और निष्कर्ष के विवेचन की स्थिति का निर्धारण करता है। किसी भी शोध प्रबन्ध के लिए संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण करना आवश्यक है क्योंकि इससे शोधकर्ता को अपने शोध विषय के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है और वह अपने अध्ययन के दौरान कसी भी सं□वित □टकाव से बच जाता है।[2] इसके अतिरिक्त प्रत्येक शोधकर्ता के लिए अपने विषय से संबंधित उपलब्ध साहित्य की जानकारी होना आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्ता ने नशे की आदत से सम्बन्धित जो अनुसंधन हुए है उनका पुनः निरीक्षण किया है। कुछ अध्ययन निम्न प्रकार से है।

हाकिन्स, केटलन्स और मिलर ने 1992 में अपने शोध में पाया कि छात्र के स्तर एवं विद्यालय द्वारा स्तर के अनुकूल बनाए गए मूल्यांकन चरमों में नकारात्मक सम्बन्ध छात्र को नशे की आदत की ओर आकर्षित करता है तथा शैक्षिक स्तर की प्राप्ति का नशे की आदत से सीध सम्बन्ध है। वी.वी.एम. के विवेक ने बंगाल में 2000 में अपने शोध में पाया कि □ारत में 30 पुरुष और 5 स्त्रियां नशे पर पूर्णतया आश्रित हैं कलकत्ता जैसे बड़े शहर में लगभग 40,000 व्यक्ति नशे से ग्रसित है।[3] जबकि कलकत्ता में विभिन्न नशा मुक्ति केन्द्र हैं। इसके बावजूद नशे की प्रवृत्ति का निरन्तर विकास हो रहा है। वर्ष 2000 में 24 लोगों की मृत्यु का कारण नशा करना है। अब तक □ारत में लगभग मिलियन लोगों की पहचान हो चुकी है जो हीरोइन का प्रयोग करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय नेरोटिक्स नियंत्रण बोर्ड, विएना, 2002 की रिपोर्ट में कहा गया कि □ारतीयों की पसंद अफीम से हिरोइन की तरफ ज्यादा हो गई है। संयुक्त परिवार, माता–पिता के प्यास का अभाव, उन घरों में जहाँ पर माता–पिता जो काम करते हैं, जहाँ पर पुराने धार्मिक विचार व जीवन के मूल्य नगण्य है, वहाँ पर नशा ग्रसित होते है, ग्रसित व्यक्ति अपने नशे के लिए अपराध भी करते हैं।[4] नशे की लत का राष्ट्रीय संस्थान (एन.आई.डी.ए.) 2004 में एक सर्वे के आधार पर पाया गया कि नशे से ग्रसित व्यक्तियों में एच.आई.वी. हेपेटाइटस बी. और सी.ए.टी.बी. की बीमारियां अधिक पाई जाती हैं। परन्तु नशे से ग्रसित व्यक्तियों को पढ़ाई, परामर्श, इलाज और पुर्नवास कार्यक्रम से नशे से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

सामाजिक टिप्पणी में युथ की आवाज अप्रैल, 4, 2008 में कहा गया कि नशा बढ़ता है तो उसके कुछ कारण हैं जैसे फैशन का बदलाव, जीवन मूल्यों का बदलाव प्रतिस्पर्ध नौजवान नशे से ग्रसित हो जाते हैं समाजशास्त्री के अनुसार पुराने वर्षों से अफीम, मोरफिन का प्रयोग होता आ रहा है। आज एल्कोहल का प्रयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

अध्ययन का प्रारूप– प्रस्तुत अध्ययन में किशोरावस्था से सम्बन्धित छात्र जो नशे की प्रवृति से ग्रसित हैं। उनका अध्ययन किया गया है। छात्रों में नशे की प्रवृत्ति के कारणों को जानने के लिए प्रकरण अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श– अनुसंधान में सामाजिक मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षणिक अनुसंधान में न्यादर्श का अत्यधिक महत्त्व है। न्यादर्श समूचे इकाई समूह में से चुनी हुई ऐसी ईकाइयों का समूह है, जो पूर्ण इकाई का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करे। प्रस्तुत अध्ययन में मध्य प्रदेश के रीवा नगर में स्थित एक विद्यालय के कक्षा 6 से लेकर कक्षा 10 तक

के 20 छात्रों को अध्ययन के लिए चुना गया है। कक्षा 6 से लेकर कक्षा 10 तक के छात्रों का आयु वर्ग 14 से 19 वर्ष तक का है, जो कि किशोरावस्था से संबंध रखते हैं।

अध्ययन विधि की विस्तृत व्याख्या– प्रस्तुत अध्ययन में प्रकरण अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है। प्रकरण अध्ययन विधि जिसमें अनुसंधानकर्ता व्यष्टि या इकाई से गहन पूछताछ करने का प्रयास करता है। वह वर्तमान स्थिति, पिछले अनुभवों व वातावरण की शक्तियों जो व्यष्टि या सामाजिक इकाई के व्यवहार के लिए प्रकार परस्पर संबंधी है के विषय में, प्रासंगिक आकड़े एकत्र करता है।[5] घटकों व उनके पारस्परिक संबंधित के विश्लेषण से अनुसंधयक को इकाई का व्यापक व समकालीन चित्र बनाने में सहायता मिलती है। प्रतिरूप प्रकरण अध्ययन सामाजिक इकाई का गहन अन्वेषण होता है। सामाजिक इकाई, कोई व्यष्टि, परिवार, स्कूल, दोषियों का वर्ग, निर्गमपाती हो सकता है। मार्गदर्शक सलाहकार व समाज सेवी किसी विशेष स्थिति या समस्या के निदान व उसकी चिकित्सा की अ़उशंसाओं के लिए ऐसे प्रकरण अध्ययन करते है। वह किसी व्यक्ति से आंकड़े एकत्र करते है और उसे अनूठी व्यक्तित्व मानकर उसमें अपनी अनुरक्ति सीमित व्यक्तियों में प्रतिनिधि के रूप में अभिरूचि रखते हैं तथा सावधानीपूर्वक चयनित व्यक्तियों केवर्ग से संबंधित आंकड़े एकत्रित करते हैं। [6] जिससे जिस समष्टि का वह प्रतिदर्श निरूपण करते है। उसके बारे में वैध व्यापकताएं व्युत्पन्न की जा सकें। प्रकरण अध्ययन सर्वेक्षण से भिन्न नहीं होता परन्तु बड़ी संख्या में इकाईयों से कुछ घटकों की सूचना एकत्र करने के स्थान पर अनुसंधयक सीमित संख्या में निरूपित प्रकरणों का गहरा व गहन अध्ययन करता है।[7] यह अपेक्षाकृत विस्तार में सकीर्ण परंतु प्रकृति में समग्र व अधिक सूचनादायक होता है और अधिक गुणात्मक आंकड़े प्रदान करने के लिए सर्वेक्षण विधि के संपूरक के रूप में प्रायः प्रकरण अध्ययन का प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्ष– नशे की प्रवृति से ग्रसित किशोरावस्था के 20 छात्रों का व्यक्तिगत अध्ययन करने के पश्चात् यह देखा गया है, कि छात्र नशा अपने मित्रों के साथ के लिए करते है। उन्हें लगता है कि यदि वे उनके साथ नशा नहीं करेगें तो वे उनके अच्छे दोस्त नहीं बनेगें। उनको अपने मित्रों के साथ रहना अच्छा लगता है। सभी प्रकरण अध्ययनों का सर्वेक्षण करने के पश्चात् नशे के निम्नलिखित कारण सामने आए हैं।

परिवार में नशे की प्रवृत्ति– जिस परिवार में नशे की प्रवृत्ति पाई जाती है उस परिवार के लड़कों में नशे की प्रवृत्ति आने की संभावनाएँ अधिक होती हैं। क्योंकि वे अपने बड़ों को नशा करते हुए देखते हैं। उनको लगता है कि नशा करना कोई गलत कार्य नहीं है।

शीघ्र उत्तेजक होना– किशोरावस्था में छात्रों में लड़ाई–झगड़ा करने की प्रवृत्ति अधिक शीघ्रता से जन्म लेती है। इस आयु वर्ग के बच्चे जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं और नशा करने के पश्चात् किशोरों को लगता है कि अब उनमें लड़ाई–झगड़ा करने के लिए अधिक शक्ति एवं चुस्ती है। अपने आपको शीघ्र उत्तेजित करने के लिए वे नशे का प्रयोग सहारा लेते हैं।

नए अनुभव प्राप्त करने की इच्छा– किशोरावस्था में छात्रों का विकास शीघ्रतापूर्वक हो रहा होता है तो उस समय छात्र में नए अनुभव प्राप्त करने की □ संभावना का विकास भी होता है। विभिन्न प्रकरण अध्ययनों का सर्वेक्षण करने से पता चलता है कि कुछ छात्र नशे का प्रयोग नए अनुभव प्राप्त करने के उद्देश्य से करते हैं।

बुरी संगत– विभिन्न प्रकरण अध्ययनो का सर्वेक्षण करने से पता चला कि कुछ छात्र नशे का प्रयोग अपने मित्रों के साथ मित्रता बनाए रखने के लिए करते हैं। उनके मित्र नशा करते है, इसलिए वे भी नशे से

ग्रसित हैं। छात्र के अनुसार यदि वह नशा नहीं करेगा तो उसके मित्रा नाराज हो जाएंगे तथा उसके साथ मित्रता तोड़ देंगे। इस प्रकार नशे की प्रवृत्ति का कारण बुरी संगत भी है।

जागरूकता की कमी– नशे के दुष्प्रभाव के प्रति अज्ञानता के कारण भी कुछ छात्र नशे का प्रयोग कर रहे हैं। उन्हें नशे का प्रयोग करना अच्छा लगता है, इसलिए वे उसके दुष्परिणामों के प्रति सचेत नहीं होते हैं। अतः नशे के प्रति जागरूकता के कारण किशोरावस्था के छात्र नशे का प्रयोग करते हैं।

ग्रसित छात्र के प्रति उसके सहपाठियों के विचार– नशे से ग्रसित छात्र के प्रति उसके सहपाठी सहयोगात्मक भावना रखते हैं। कक्षा के छात्र अपने सहपाठी को नशे की आदत से छुटकारा दिलाने के लिए उसकी मदद करने को तैयार हैं। वे उसके साथ दोस्ती करना चाहते हैं। अध्ययन कार्यों में भी कक्षा के सभी छात्र ग्रसित छात्र की मदद करने को तैयार हैं। केवल कुछ ग्रसित छात्र जिनका परिवार नशे की आदत से ग्रसित है व जिस छात्र के माता–पिता अपने बच्चे की नशे की आदत से परिचित होने के बावजूद अपने बच्चे की नशे की आदत को लेकर चिंतित नहीं हैं। उन छात्रों के साथ कक्षा के अन्य छात्र दोस्ती नहीं करना चाहते। वे उस छात्र से दूरी बनाए रखना चाहते हैं क्योंकि उनके माता पिता ग्रसित छात्र से दूरी बनाए रखने के लिए कहते हैं। जिन ग्रसित छात्रों के माता पिता का व्यवहार उनके साथ सहयोगात्मक हैं तथा काउंसलिंग करने के पश्चात् जिनके व्यवहार में थोड़ा बहुत परिवर्तन आया है उस ग्रसित छात्र के साथ कक्षा के अन्य विद्यार्थियों का व्यवहार सहयोगपूर्ण है।

ग्रसित छात्र के प्रति उसके परिवार के सदस्यों के विचार– ग्रसित छात्र जिसके परिवार में कभी नशे का प्रयोग नहीं हुआ तथा जिसका परिवार पढ़ा लिखा है वे अपने बच्चे की नशे की आदत को लेकर चिंतित है। वे अपने बच्चे को इससे छुटकारा दिलाने के लिए सभी प्रकार के प्रयास करने को तैयार हैं। वे अध्यापक एवं मुख्याध्यापक के बुलाने पर विद्यालय में समय–समय पर आते हैं। विद्यालय में उन्होंने अपने बच्चे की काउंसलिंग भी करवाई है। वे अपने बच्चे को नशा मुक्ति केन्द्र भी लेकर गए तथा उनके द्वारा बताए गए उपचार को उन्होंने सावधानी पूर्वक अपनाया। योग केन्द्रों में भी बच्चे को लेकर गए। इसके विपरीत जिन ग्रसित छात्रों का पारिवारिक वातावरण नशे से ग्रसित हैं। उन्हें अपने बच्चे की नशे की आदत की चिंता नहीं है। चाहे वह लड़की है या लड़का। ग्रसित छात्रा के परिवार के सदस्य उनके प्रति किसी प्रकार का सहानुभूति पूर्ण व्यवहार नहीं अपनाते है। उन्हें अपने बच्चे की नशा करने की आदत को लेकर कोई चिंता नहीं हैं। वे उन्हें किसी नशा केन्द्र मुक्ति में लेकर नहीं गए। अध्यापक एवं मुख्याध्यापक के साथ उन्होंने किसी प्रकार का सहयोग नहीं किया। काउंसलिंग का भी उन पर कोई असर नहीं हुआ। चिकित्सक द्वारा समझाए जाने पर भी वे किसी प्रकार का सहयोग नहीं करना चाहते। ग्रसित छात्र पर अपने परिवार के सदस्यों का किसी प्रकार का कोई दबाव न होने कारण वे इस प्रवृत्ति में और अधिक लिप्त होते जा रहे हैं।

ग्रसित छात्र के प्रति अध्यापक के विचार– जैसा कि अध्यापक में सहानुभूति एवं सहयोग के गुणों का समावेश होता है। इसी गुण के समावेश के कारण अध्यापक अपने छात्रों के साथ सहानुभूति एवं सहयोगात्मक व्यवहार करते हैं। अध्यापक जिनकी कक्षा में नशे की आदत से ग्रसित छात्र हैं अपने छात्र को लेकर चिंतित हैं। उन्होंने छात्र की नशे की आदत से छुटकारा दिलाने के लिए हर संभव प्रयास किए। उन्होंने माता–पिता को बुलाकर बच्चे की समस्या से अवगत कराया और समय–समय पर काउंसलिंग करवाई। कक्षा के अन्य छात्रों को ग्रसित छात्रों के सहयोग करने के लिए कहा ताकि ग्रसित छात्रों को

उसकी इस आदत से छुटकारा दिलाया जा सके। अध्ययन कार्य में अध्यापक से ग्रसित छात्र की हर संभव सहायता की। अध्यापक ने यह भी ध्यान रखा कि कोई अन्य छात्र ग्रसित छात्र के साथ सम्पर्क में आकर इस प्रवृत्ति से प्रभावित न हो जाएं। अध्यापक का सहयोग पूर्ण रहा है। नशे की प्रवृत्ति से छुटकारा दिलाने के लिए अध्यापक हर संभव प्रयास करने के लिए तैयार हैं। अध्यापक ग्रसित छात्र के प्रति किसी प्रकार का नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं अपनाते, बच्चे की समस्या के समाधान हेतु वे सदैव तत्पर हैं।

नशा मुक्ति केन्द्र के चिकित्सकों के विचार– नशा मुक्ति केन्द्र के चिकित्सक का कहना है कि नशे की आदत से ग्रसित छात्र को जितनी जल्दी हो सके चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवानी चाहिए, अभिभावकों को चाहिए कि वह अपने नशे से ग्रसित बच्चे को जितना जल्दी हो सके उतनी जल्दी नशा मुक्ति केन्द्र लाए नशा मुक्ति केन्द्र में ग्रसित बच्चे को मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को सुधरने का प्रयत्न किया जाता है। नशा मुक्ति केन्द्र में ग्रसित बच्चे को मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को सुधरने का प्रयत्न किया जाता है। नशा से मुक्ति के लिए चिकित्सक से ज्यादा ग्रसित बच्चा स्वयं अपनी मदद करता है। जब बच्चा मानसिक रूप से नशा छोड़ने के लिए तैयार होता है तभी इससे बच्चे को मुक्ति मिल सकती है। चिकित्सक का कहना है कि हम सबसे पहले बच्चे को नशा की आदत से छुटकारा दिलाने के लिए उसे मानसिक रूप से तैयार करते है। इसके लिए अभिभावकों, विद्यालय के अध्यापकों की सहायता ली जाती है। अभिभावकों एवं अध्यापकों की सहायता के बिना यह कठिन कार्य है। यदि ग्रसित छात्र नशा मुक्ति केन्द्र में अपनी चिकित्सा सुचारू रूप से करवाता है तो वह नशे की आदत से छुटकारा पा सकता परन्तु इसके लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है। ग्रसित छात्र यदि नशा छोड़ने का दृढ़ संकल्प ले तो इस आदत से जल्दी निजात मिल सकती है।

नशा खरीदने के लिए आय के स्त्रोत– नशे की आदत से ग्रसित 20 छात्रों के अध्ययन के पश्चात् नशे की खरीदारी के लिए जो स्त्रोत हमारे समक्ष आए वे मित्र मंडली एवं जेब खर्च हैं। अध्ययन में पाया गया कि ग्रसित छात्र अपने मित्रों के सहयोग से नशा प्राप्त करते है। कुछ छात्र अपने जेब खर्च का प्रयोग नशा खरीदने के लिए करते है। कभी–कभी वे चोरी भी करते हैं। कुछ छात्र अध्ययन के अलावा पार्ट–टाइम कार्य करते हैं। जिससे हुई आय से वे नशा खरीदते हैं, जिन ग्रसित छात्रों के परिवार में नशे का प्रयोग होता है, वे छात्र अक्सर अपने घर से ही नशा प्राप्त कर लेते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

1. गेरेट, ई. एच. (1957) : शिक्षा मनोविज्ञान के प्रयोग दिल्ली, टूडे ऑफसेट प्रिंटर्स
2. गेरेट, ई. एच. (1980-81) : शिक्षा मनोविज्ञान में साांख्यिकी
3. नटबीम, डी. और एरो, एल. एफ. (1991) : स्मोकिगंस और पीयूपिल ऐटीटयूट टूवर्ड स्कूलः द इम्पलीकेशन फोर हेल्थ ऐजुकेशन विद यंग पीपल। रिजल्टस फ्ररोम द डब्ल्यू. एच. ओ. स्टडी बिहेवीयर अमंग स्कूल चिल्ड्रन। हेल्थ एजुकेशन रिसर्च थ्यिरी और प्रेक्टीस, 6, 331-338~

4. हाकिन्स, जे.डी., कैटलन्स, आर.एच. और मिलर, जे. वाई. (1992)। रिस्क और प्रोटेक्टिव फेक्टर फोर एल्कोहल और अंदर ड्रग प्रोब्लम इन एडोलोसेन्स और अरली एडल्टहूड : इम्पलीकेशन्स फोर सबस्टेन्स एबूज प्रेवेन्शन। साइकोलोजिकल बुलेटीन, 112, 64–105~
5. मंगल, एस.के. (2008) : शिक्षा मनोविज्ञान : नई दिल्ली, पी.एच.एल. लरंनिंग प्राइवेट लिमिटेड।
6. सरीन और सरीन (2008) : शैक्षिक अनुसंधान विधियां : आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर
7. मंगल, एस.के. एवं मंगल, उमा, (2009) : शिक्षा तकनीकी : नई दिल्ली, पी.एच.एल. लरंनिम प्राइवेट लिमिटेड